Dated: 10/10/2019

दारा शिकोह ने हिन्दू और मुस्लिम धर्मों के बीच समानताएं तलाश कीं: प्रो0 अख़्तरुलवासे

राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद के तत्वाधान में मोहम्मद दारा शिकोहः जीवन और कार्य विषय पर दो दिवसीय सेमिनार का समापन

नई दिल्ली: दारा शिकोह ने जिन बुनियादों को हमवार किया और जिन मुल्यों को बढ़ावा दिया वह असाधारण थे। दारा शिकोह पहला व्यक्ति था जिसने वाद–विवाद के स्थान पर संवाद की शुरूआत की। दारा शिकोह ने हिन्दू और मुस्लिम धर्मों के बीच समानताएं तलाश कीं।

यह विचार मौलाना आजाद विश्वविद्यालय के अध्यक्ष और प्रसिद्व विद्वान प्रो0 अख़्तरुलवासे ने उर्दू परिषद के तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय सेमिनार ''मोहम्मद दारा शिकोहः जीवन और कार्य'' में दूसरे दिन के सत्र की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने ने आगे कहा कि दारा शिकोह हमारी सांस्कृतिक, सामाजिक, वैचारिक विरासत के संरक्षक थे। दारा शिकोह ने अपनी पुस्तक सफीनतुल–औलिया में बेहतरीन शोध प्रणाली अपनायी थी। हमें दारा शिकोह के बारे में जो सकारात्मक चीजें हैं उन्हें अवश्य अपनाना चाहिए और उन्हें आम लोगों तक पहुंचाना चाहिए। उन्होंने उर्दू परिषद् के निदेशक डा0 शेख़ अक़ील अहमद की प्रशंसा करते हुए कहा कि दारा शिकोह को हमने भुला दिया था और उर्दू परिषद् ने इस भूले हुए हुए शहज़ादे की हमें याद दिलायी है।

उन्होंने डा0 शेख अक़ील अहमद को उर्दू परिषद् में निदेशक के तौर पर एक साल पूरा करने पर बधाई दी। इस सत्र में डा0 मुश्ताक़ अहमद तुजारवी, प्रो0 अख़्लाक़ अहमद आहन, प्रो0 अलीम अश्रफ जायसी और प्रो0 अब्दुल क़ादीर जाफरी ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। इस सत्र का संचालन डा0 मो0 काज़िम ने किया। इस सत्र से पूर्व पहले सत्र में सीरिया से आए श्री अमर हसन ने दारा शिकोह के कार्यों पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने शोध पत्र में बताया कि दारा शिकोह ने इस्लाम और हिन्दू धमों के बीच समानता व्यक्त करने वाले बिन्दुओं को खोजा। दारा शिकोह 'वहदतूल–वजूद' के दर्शन से बहुत प्रभावित था। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए डा0 अताउल्लाह खान सन्जरी ने शोध पत्रों पर अपने विचार व्यक्त किए। साथ ही शोध पत्र से अलग हटकर उन्होंने उर्दू वालों से उर्दू की विकिपीडिया का विकास करने और विकिपीडिया पर उर्दू की सामग्री को अधिक से अधिक अपलोड करने पर बल दिया। इस सत्र का संचालन डा0 शाजिया उमैर ने की।

चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो0 सैयद हुसैन अब्बास ने की जिसमें प्रो0 इराक़ रज़ा ज़ैदी और डॉ0 महशर कमाल ने अपने शोध पत्र पढ़े। कार्यक्रम का संचालन मुईन शादाब ने किया।

पांचवे सत्र की अध्यक्षता प्रो0 सैयद ऐनुल हसन ने की जिसमें पद्मश्री डॉ0 नाहीद आबदी, प्रो0 मोहम्मद हबीब ने अपने शोध पत्र पढ़े। सत्र का संचालन मोहतरमा ग़ज़ाला फ़ातिमा ने किया।

अंत में उर्दू परिषद् के निदेशक डॉ0 शेख अक़ील अहमद ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

(जन सम्पर्क प्रकोष्ठ)